KARNATAKA SCHOOL EXAMINATION AND ASSESSMENT BOARD
I PUC EXAM-MIDTERM. 2025

HINDI

I अ

1) ii) बेनीमाधव सिंह 1
2) i) प्रेम 1
3) iii) इन्द्र 1
4) iv) संसार का 1
5) ii) मृत्यु के 1
6) i) निराशा 1
7) iii) राजभवन 1
8) i) धूल में 1
9) iii) मन्नु भंडारी 1
10) ii) संतू 1

आ

11 हाथी 1
12 संतान 1
13 शनिवार 1
14 ईर्ष्या-द्वेष 1
15 पूँजी 1

इ

16. i) C) क्रोध को दबाकर बैठ जाना 1
ii) D) गुस्सा करना 1
iii) A) शोर मचाना 1
iv) B) गिड़गिड़ाना 1
v) F) आलिंगन करना 1

II अ.

17) बेनीमाधव सिंह गौरीपुर गाँव के जमींदार और नम्बरदार थे उनके पितामह किसी समय बड़े धन-धान्य सम्पन्न थे। गाँव का पक्का तालाब और मंदिर जिनकी अब मरम्मत भी 3

मुश्किल थी, उन्हीं के कीर्ति स्तंभ थे। कहते हैं, इस दरवाजे पर हाथी झूमता था, अब उसकी जगह एक बूढ़ी भैंस थी, जिसके शरीर में अस्थि- पंजर के सिवा और कुछ शेष न रहा था, पर दूध शायद बहुत देती थी; क्योंकि एक न एक आदमी हाँडी लिए उसके सिर पर सवार रहता था। बेनीमाधव सिंह अपनी आधी से अधिक संपत्ति वकीलों को भेंट कर चुके थे। इनकी वर्तमान आय एक हजार रुपये वार्षिक से अधिक न थी। ठाकुर साहब के दो बेटे थे। बड़े का नाम श्रीकंठ सिंह था। उसने बहुत परिश्रम और उद्योग के बाद बी०ए० की डिग्री प्राप्त की थी। अब दफ्तर में नौकर था। छोटा लड़का लाल बिहारी सिंह दोहरे बदन का, सजीला जवान था। भरा हुआ मुखड़ा, चौड़ी छाती। भैंस का दो सेर ताजा दूध वह उठ कर सबेरे पीता था। श्रीकंठ सिंह की दशा बिलकुल इसके विपरीत थी।

18) भारत के राष्ट्रीय आदर्श हैं:- त्याग और सेवा, 3
आप इन धाराओं में तीव्रता उत्पन्न कीजिए और शेष सब अपने- आप ठीक हो जाएगा। तुम काम में लग जाओ, फिर देखोगे इतनी शक्ति आएगी कि तुम उसे संभाल न सकोगे। दूसरों के लिए रत्ती- भर सोचने, काम करने से भीतर की शक्ति जाग उठती है, दूसरों के लिए रत्ती- भर सोचने से धीरे- धीरे हृदय में सिंह का सा बल आ जाता है। तुम लोगों से मैं इतना स्नेह करता हूँ, परंतु यदि तुम लोग दूसरों के लिए परिश्रम करते- करते मर भी जाओ तो भी यह देखकर मुझे प्रसन्नता होगी।

19) कुछ 'मिशनरी' निन्दक मैंने देखे हैं, उनका किसी 3
से बैर नहीं, द्वेष नहीं। वे किसी का बुरा नहीं सोचते। पर चौबीसों घंटे वे निन्दा कर्म में बहुत पवित्र भाव से लगे रहते हैं। उनकी नितांत निर्लिप्तता, निष्पक्षता इसी से मालूम होती है कि वे प्रसंग आने पर अपने आप की पगड़ी भी

उसी अनन्द से उछालते हैं, जिस आनन्द से अन्य लोग दुश्मन की। निन्दा इनके लिए 'टॉनिक' होती है।

20) बिन्दा के दुबले-पतले हाथ-पैर न जाने किस अज्ञात भय से अवसन्न रहते थे। कहीं से कुछ आहट होते ही उसका विचित्र रूप से चौंक पड़ना और पंडिताइन चाची का स्वर कान में पड़ते ही उसके सारे शरीर का थरथरा उठना, मेरे विस्मय को बढ़ा ही नहीं देता था, प्रत्युत उसे भय में बदल देता था, और बिन्दा की आँखें तो मुझे पिंजड़े में बन्द चिड़िया की याद दिलाती थी। 3

21) खिड़की से झाँककर मैं बिन्दा के दरवाजे पर जमा हुए आदमियों के अतिरिक्त और कुछ न देख सकी और इस प्रकार की भीड़ से विवाह और बारात का जो सम्बन्ध है, उसे मैं जानती थी। तब क्या उस घर में विवाह हो रहा है, और हो रहा है तो किसका? आदि प्रश्न मेरी बुद्धि की परीक्षा लेने लगे। पंडित जी का विवाह तो तब होगा, जब दूसरी पंडिताइन चाची भी मर कर तारा बन जाएंगी और बैठ न सकने वाले मोहन का विवाह सम्भव नहीं, यही सोच-विचार कर मैं इस परिणाम तक पहुंची कि बिंदा का विवाह हो रहा है और उसने मुझे बुलाया तक नहीं। इस अचिन्त्य अपमान से आहत मेरा मन सब गुड़ियों को साक्षी बनाकर बिन्दा को किसी भी शुभ कार्य में न बुलाने की प्रतिज्ञा करने लगा 3

22 प्रसंग-प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक साहित्य वैभव के 'बड़े घर की बेटी' पाठ से लिया गया है, जिसके लेखक मुंशी प्रेमचंद जी हैं। 3

संदर्भ- जब लालबिहारी आनंदी के साथ अभद्र व्यवहार करता है और उसके मैके

भला-बुरा कहता है।

स्पष्टीकरण: आनंदी ने सारा घी मांस पकाने में डाल दिया था। जब लालबिहारी खाने बैठा तो दाल में घी न देखकर भावज ~~पूछा~~ पूछा दाल में घी क्यों नहीं छोड़ा, आनंदी कहा घी पावभर से अधिक न था वह सब मैंने मांस पकाने में डाल दिया। लालबिहारी जोर से बोला अभी परसो घी आया है, इतना जल्दी उठ गया ? आनन्दी के जवाब देने से लालबिहारी सूखी लकड़ी की तरह जल उठा। क्षुधा से बावला मनुष्य ~~क~~ जरा-जरा सी बात पर तिनक उठता है। लालबिहारी को भावज की यह ढिठाई बहुत बुरी मालुम हुई, ~~इसी संदर्भ~~ तिनककर बोला- मैके में तो चाहे घी की नदी बहाती हो।

इसी संदर्भ लेखक ने कहा है - स्त्री गालियाँ सह लेती हैं, मार भी सह लेती हैं, पर मैके की निन्दा उनसे नहीं सही जाती। आनंदी मुह फेरकर बोली - हाथी मरा भी तो नौ लाख का। वहाँ इतना घी नित्य नाई-कहार खा जाते हैं।

प्रसंग 23) प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य-पुस्तक साहित्य वैभव के 'युवाओं से' पाठ से लिया गया है। जिसके लेखक स्वामी विवेकानंद जी हैं। 3

संदर्भ युवाओं को उनपने भीतर की शक्ति और क्षमता से परिचित कराने के उद्देश्य से विवेकानंद ने ये पंक्तियाँ कही हैं।

स्पष्टीकरण: - तुम ईश्वर की संतान हो, अमर आनंद के भागी हो, पवित्र और पूर्ण आत्मा हो। अतएव तुम कैसे अपने को जबर्दस्ती दुर्बल कहते हो ? उठो साहसी बनो, वीर्यवान बनो। सब उत्तरदायित्व अपने कंधे

पर लो - इसी संदर्भ में लेखक कहा है कि - यह याद रखो कि तुम स्वयं अपने भाग्य के निर्माता हो। तुम जो कुछ बल या सहायता चाहो, सब तुम्हारे ही भीतर विद्यमान है।

24) प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक साहित्य वैभव के 'निन्दा रस' पाठ से लिया गया है। जिसके लेखक 'हरिशंकर परसाई' जी हैं। 3

संदर्भ: जब व्यक्ति खुद के बल पर आगे नहीं बढ़ पाता है तो वह दूसरों की निन्दा करना प्रारंभ कर देता है। इससे उसके अहम को संतुष्टि मिलती है, इसी संदर्भ में ये पंक्तियाँ कही गयी हैं।

स्पष्टीकरण: निन्दा का उद्गम हीनता और कमजोरी से होता है। मनुष्य अपनी हीनता से दबता है। वह दूसरों की निंदा करके ऐसा अनुभव करता है कि वे सब निकृष्ट हैं और वह उनसे अच्छा है। उसके अहं की इससे तुष्टि होती है। बड़ी लकीर को कुछ मिटाकर छोटी लकीर को बड़ी बनती है। ज्यों-ज्यों कर्म क्षीण होता जाता है, त्यों-त्यों निन्दा की प्रवृत्ति बढ़ती जाती है। कठिन कर्म ही ईर्ष्या-द्वेष और उनसे उत्पन्न निन्दा को मारता है। इन्द्र बड़ा ईर्ष्यालु माना जाता है, क्योंकि वह निठल्ला है। स्वर्ग में देवताओं को बिना उगाया अन्न, बे बनाया महल और बिन बोये फल मिलते हैं। अकर्मण्यता में उन्हें अप्रतिष्ठित होने का भय बना रहता है, इसलिए कर्मी मनुष्यों से उन्हें ईर्ष्या होती है।

25) प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक साहित्य-वैभव के 'बिन्दा' पाठ से लिया गया है। जिसकी लेखिका महादेवी वर्मा हैं। 3

संदर्भ: - दूध के उफान कर गिर जाने पर बिन्दा लेखिका के घर छिपने के लिए भाग आती

है, उसे पता है कि आज उसे दंड मिलने से कोई नहीं बचा सकता।

स्पष्टीकरण : चूल्हे पर चढ़ाया दूध उफना जा रहा था। बिन्दा ने नन्हें-नन्हें हाथों से दूध की पतीली उतारी अवश्य, पर वह उसकी उँगलियों से छूट कर गिर पड़ी। खौलते दूध से जले पैरों के साथ दरवाजे पर खड़ी बिन्दा का रोना देख लेखिका तो हत-बुद्धि सी हो रही। पंडिताइन चाची के उग्र स्वर ने भय से हमारी दिशाएं रूँध दीं, इसी से हड़बड़ाहट में दोनों उस कोठरी जा घुसीं, जिसमें गाय के लिए घास भरी जाती थी। लेखिका को घास की पत्तियाँ चुभ रही थीं पर बिन्दा अपने जले पैरों को घास में छिपाये और दोनों ठंडे हाथों से लेखिका का हाथ दबाये ऐसे बैठी थी मानों घास का चुभता हुआ ढेर रेशमी बिछौना बन गया हो।

सुबह माँ ने बिन्दा के पैरों पर तिल का तेल और चूने का पानी लगाकर जब अपने विशेष संदेशवाहक के साथ बिन्दा को घर भिजवा दिया, तब उसकी क्या दशा हुई, यह बताना कठिन है। इसी संदर्भ में लेखिका ने ये पंक्ति कही हैं — पर इतना तो मैं जानती हूँ कि पंडि-ताइन चाची के न्यायविधान में न क्षमा का स्थान था, न अपील का अधिकार

III अ 26) मीराबाई कृष्ण की अनन्य भक्त थी। मीरा की भक्ति माधुर्य और दास्य भाव लिये हुए हैं, वे कहती है कि मेरे तो एक मात्र गिरधर गोपाल है दूसरा कोई मेरा अपना नहीं है, श्रीकृष्ण के अविनाशी चरणों की वंदना करती है। और कहती है कि यह संसार तो चिड़ियों का खेल है सांझ होते ही सब कुछ समाप्त हो जाएगा। इसलिए 2

मोह माया के बंधन में न फसनकर प्रभु चरणो की बंदना करो और जीवन मरण के बंधन से मुक्त हो जाना चाहती हैं।

27) तुलसी दास जी कहते हैं कि मधुर ~~बच~~ वचन से क्रोध शांत हो जाता है, जाति - पाति का भेद - भाव मिट जाता है। अभिमानी व्यक्ति से कोई भी संबंध रखना नहीं चाहता। मधुर वचन ठीक वैसे काम करता है जैसे उफनते हुए दुध में थोड़ा शीतल जल डालने से वह शांत हो जाता है। ठीक वैसे ही मधुर वचन से व्यक्ति का क्रोध शान्त हो जाता है। 2

III आ

28) सीता जी का वन में आकर अपनी कुटिया में अपने पति श्रीराम और देवर लक्ष्मण के साथ सुखपूर्वक जीवन यापन कर रही हैं। पहली बार यहाँ अपने पैरों पर खड़ी स्वयं अपना काम अपने हाथों से कर रही हैं और सफलता के सुख का अनुभव कर रही है। काम करने से पसीना निकलने पर अपने आँचल से पंखा झलती है और स्वास्थ्य भी यहाँ अच्छा है। यहाँ कुटियों में प्रकृति के बीच वे बहुत सुखी हैं। 2

29) इलाहाबाद के पथ पर पत्थर तोड़ने वाली स्त्री का रंग काला है वह युवती है जो पत्थर तोडने का श्रमसाध्य कार्य भीषण गरमी में कर रही है। जिस समय में लोग अपने घरों में आराम कर रहे हैं उस समय 2

वह हथौड़े से पत्थर पर बार-बार प्रहार कर रही है। जहाँ वह बैठी पत्थर तोड़ने का काम कर रही है वहाँ कोई छायादार वृक्ष नहीं है। लेखक को जब अपनी ओर देखते देखा तो एक क्षण के लिए उस भवन की ओर वह छिन्न मन से देखती है, ऐसा लगता है जैसे उसे किसीने मारा हो पर वह रो नहीं सकती। एक क्षण के बाद वह अपने कपड़े ठीक करती है और अपने काम में मग्न हो कहती है हाँ मैं तोड़ती पत्थर।

30.) कवयित्री कहती है कि शैशव के सुन्दर प्रभात में उन्होंने नव विकास देखा है। यौवन की मादक लाली में जीवन का हुलास देखा है। जीवन रूपी समर में उन्होंने आशालतिका का विकास देखा है। 2
आकांक्षा, उत्साह और प्रेम का जीवन के हर पड़ाव पर क्रम-क्रम से प्रकाश देखा है। निराशा उन्हें कभी भी खला नहीं पायी, और ना ही उनके मन में विरक्ति ला पायी ना ही घृणा उनके हृदय में अशान्ति ला पायी लेखिका कहती हैं कि सदा उन्होंने मधुर प्रेम का व्यवहार किया और बदले में लोगों से भी अंतस्तल का प्रेम पाया है।

31) सीताजी यहाँ औरों के हाथों नहीं पलती है। जीवन में पहली बार उनके हाथ कार्य करने में लगें हैं। यहाँ वे अपने पैरों पर खड़ी हैं, यानि आत्मनिर्भर हैं। कार्य करने से पसीना निकलता है जिससे उन्हें स्वास्थ्य लाभ भी मिल रहा है, और वह अपने हाथों से स्वयं पंखा झलती हैं। अपने पति और देवर को अपने 2

भोजन परोसती हैं। सीता जी अपनी कुटिया में सारा काम स्वयं करती है और सफलता के सुख का अनुभव अपने जीवन में पहली बार किया है।

तोड़ती पत्थर कविता में सड़क पर पत्थर तोड़नेवाली
32) एक साधनहीन और असहाय नारी का अति सजीव चित्रण अंकित हुआ है। गर्मियों की तपती दुपहरी में अपने घर से दूर काम करने वाली उस नारी के प्रति कवि के मन में अपार सहानुभूति है। एक ओर धनी वर्ग ऊँची-ऊँची अट्टालिकाओं में विश्राम कर रहा है और दूसरी ओर मध्याह्न के विषम ताप में यह प्रताड़ित युवती परिश्रम-साध्य कार्य को विवश है। अर्थ-वैषम्य की ओर ध्यान आकृष्ट करती है यह रचना। 2

इ.) 33) प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक साहित्य वैभव के 'कबीर के दोहे' पाठ से लिया गया है जिसके लेखक कबीरदास जी हैं। 4

संदर्भ :- जीवन की नश्वरता के बारे में इस दोहा में चर्चा किया गया है।

भावार्थ :- माटी कुम्हार से कहती है कि तू मुझे क्या रौंदता है एक दिन ऐसा आएगा कि मैं तुम्हें रौंदूँगी। विशेष इस शरीर का गर्व नहीं करना चाहिए पंचभूतों से निर्मित शरीर एक दिन पंचभूत में मिल जाएगा। अतः मनुष्य को सबसे प्रेमपूर्वक मिलजुल कर रहना चाहिए, अंततः सबको मिट्टी में ही मिलना है चाहे राजा हो या रंक, अमीर हो या गरीब, सुन्दर हो या कुरुप कभी इस शरीर का गर्व नहीं करना चाहिए।

अथवा

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'तुलसीदास के दोहे' पाठ से लिया गया है। जिसके लेखक तुलसीदास जी हैं।

33 संदर्भ - तुलसीदास जी सदाचार की बात करते हुए ये पंक्तियाँ कहते है। 4

भावार्थ :- तुलसी दास जी कहते है कि ज्ञानी या पंडित व्यक्ति ही क्यों न हो अगर उसके मन में काम, क्रोध, मद और लोभ की भावना जब तक व्यक्ति के मन में है, तब तक वह मूर्ख के समान है। क्योंकि काम, क्रोध, मदिरा और लोभ व्यक्ति को पतन की ओर ले जाते हैं। इसलिए पंडित या सम्मानीय व्यक्ति इनसे दूर रहते हैं।

34) प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक साहित्य वैभव के 'कुटिया में राजभवन' पाठ से लिया गया है। जिसके लेखक मैथिलीशरण गुप्त जी हैं।

संदर्भ :- प्रकृति, वनस्पति तथा क्रीड़ा का सीता के मुख से वर्णन। 4

भावार्थ :- वह वधू जानकी आज जननी बनकर अपनी कुटिया में अपने पति और देवर की देख भाल करती है। सीता जी कहती है कि, यहाँ फल-फूलों से डालियाँ लदी हैं, किसी भी चीज की कमी नहीं है। हरी पत्तलें थालियों का काम करती हैं जो फल-फूलों से भरी हैं। मुनिबालाएँ यहाँ उनकी साथियाँ हैं। नदी की लहरों से ताल मिला कर सीता और उनकी सखियाँ ताली बजा-बजा कर ताल मिला कर खेलती हैं। क्रीडा सामग्री उनकी स्वर्ग की छाया बनी हुई है। इस प्रकार से सीता का मन अपनी कुटिया में राजभवन की तरह ही लगा है।

अथवा

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य - पुस्तक साहित्य वैभव के 'उल्लास' कविता से ली गयी हैं,

34) जिसकी लेखिका 'सुभद्राकुमारी चौहान' जी हैं।

संदर्भ :- प्रस्तुत कविता में कवयित्री जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण रखती हैं। 4

भावार्थ :- प्रस्तुत कविता में कवयित्री जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण रखती हैं। मानव हृदय में उठने वाले भावों को आपने अपनी सहज भाषा में अभिव्यक्त किया है। जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखने का संदेश देते हुए लेखिका कहती हैं कि कभी भी निराशा मेरे जीवन मुझे रुलाने को नहीं आई। न मैं जीवन में कभी रोई हूँ और ना ही मुझे यह संसार रोता हुआ दिखा है। अगर आँखों से दो-चार आँसू गिरे हैं तो वो भी मृदुल प्रेम के, खुशी के आँसू आँखों से गिरे हैं।

खण्ड - ग

35) शराबी को बच्चा लल्लू जमादार के कोठरी में मिला था। लल्लू जमादार उसे डाँट रहा था - सूअर रोता क्यों है? कुँवर साहब ने दो ही लातें लगाई हैं, कुछ गोली तो नहीं मार दी। शराबी चुपचाप बालक के सिसकने की आवाज सुन रहा था। भयभीत बालक बाहर चला आया। शराबी ने उसके सुन्दर मुखड़े को देखा। आँसू की बूँदें ढुलक रही थी बालक शराबी से बोला, 'मैंने दिनभर से कुछ खाया नहीं।' 'कुछ खाया नहीं इतने अमीर आदमी के यहाँ रहता है और दिन भर तुझे कुछ खाने को नहीं मिला।' 3

शराबी बालक का हाथ पकड़कर अपने साथ ले गया। एक गन्दी कोठरी का

दरवाजा खोलकर बालक को लेकर भीतर पहुँचा। बालक को खाने के लिए एक पराठे का टुकड़ा दिया और कहा- "तब तक तू इसे चबा मैं तेरा गढ़ा भरने के लिए कुछ और ले आऊँ - सुनता है रे छोकरे। रोना मत, रोएगा तो खूब पीटूँगा। मुझसे रोने से बड़ा बैर है। पाजी कहीं का, मुझे भी रुलाने का ---।" इस तरह से शराबी बालक को अपने साथ ले आया।

36) शराबी के जीवन में मधुआ के आने से शराबी ने शराब पीना छोड़ दिया। जीवन के प्रति उसके मन में सकारात्मक बदलाव आए। वह अब अपना और मधुआ का भरण पोषण करने के लिए काम करने की सोचने लगा। असका सान धरने का मशीन उसके मित्र के पास था, उसे लेकर आया और कपड़े की पोटली बाँधा। शान धरने की मशीन शराबी ने उठाया और कपड़े की पोटली बालक ने उठाया और दोनो काम पर निकल गये। 3

37) पहली पत्नी के मृत्यु पर युवक अपना सिर फोड़-फोड़कर रोने लगा और चीखने लगा - तुम मुझे छोड़कर कहाँ चली गई सुकेशी? याद है, कितनी बार तुमने कसमें खाईं थीं कि जिंदगी भर तुम मेरा साथ दोगी पर दो वर्षों में ही तुम तो मुझे अकेला छोड़कर चली गईं। अब मैं तुम्हारे बिना जीवित नहीं रह सकता। तुम मुझे अपने पास बुला लो, नहीं तो मुझे ही तुम्हारे पास आने का कोई उपाय करना पड़ेगा। तुम नहीं तो मेरे जीवन का कोई अर्थ नहीं, कोई सार नहीं, कोई रस नहीं। तुम्हीं तो मेरा जीवन थीं, मेरी प्रेरणा थीं, अब मैं जीवित रहकर करूँगा ही क्या? मुझे अपने पास बुला लो, मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता, नहीं रह सकता, किसी तरह भी नहीं रह सकता। इसी प्रकार वह विलाप करके रोता रहा, सिर फोड़ता रहा और मूक श्मशान अपनी सूखी, पथराई आँखों से इस दृश्य को देखता रहा। 3

38) श्मशान चाहता है कि काश उसके पास भी मनुष्य की तरह प्रेम भरा दिल होता, जिसमें अपने प्रिय के लिए मर मिटने की तमन्ना मचलती रहती है। कभी-कभी दूर-दूर से हवाएँ आती हैं और लैला मजनूँ और शीरीं-फरहाद की प्रेम-कहानि- याँ मुझे सुना जाती हैं तो सच मानना, मैं तड़पकर रह जाता हूँ कि काश मैं भी मजनूँ होता और लैला के वियोग में अपने को कुर्बान कर देता। प्रिय की प्रतीक्षा में, राह में पलकों के पाँवड़े बिछाकर बैठा रहता। सावन की उठी घटाएँ मेरे मन में हूक उठाती और बसन्त की सुरमई साँझें मेरे मन में तड़प बनकर रह जातीं। प्रिय का जीवन ही मेरा जीवन होता और उसकी मौत मेरी मौत। पर क्या करु, ईश्वर ने तो मुझे श्मशान बनाया है, जिसके हृदय में प्रेम नहीं, स्निग्धता नहीं, सरसता नहीं, केवल धू-धू करती आग की लपटें हैं। 3

39) मंगलसेन का स्वप्न सचमुच साकार हो उठा। समधियों के घर में उसकी वह आवाभगत हुई कि देखते बनता था। मंगलसेन आरामकुरसी पर बैठा था और पीछे एक आदमी खड़ा पंखा झल रहा था। समधी आगे-पीछे, हाथ बाँधे घूम रहे थे। एक आदमी ने सचमुच झुककर बड़े आग्रह से कहा, "और दूध लाऊँ, चाचाजी? थोड़ा सा और?" और जवाब में मंगलसेन ने कहा, "हाँ, आधा गिलास ले आओ", 3

समधियों के घर की ऐसी सज-धज कि मंगलसेन दंग रह गया और उसका सिर हवा में तैरने लगा।

40) वीरजी के परिवार में बाबूजी जो कि शहर के जाने माने व्यक्ति हैं, माँजी, बहन मनोरमा और चाचा मंगलसेन हैं जो दूर के रिश्तेदार हैं। पहले फौज में थे। और सन्तू जो घर का पुराना नौकर है। जो कि बड़ा कामचोर है। 3

'खण्ड घ'

41) अ)
i) स्वयं उनकी पत्नी को ही इस विषय में उनसे विरोध था। 1X3=3
ii) आनंदी अपने नये घर में आयी
iii) पर वह मेरा दोस्त अभिनय में पूरा है।

42) आ)
i) हम प्रतिदिन सबेरे पाँच बजे उठेंगे। (भविष्यत काल) 1X3=3
(ii) मैं दुकान पर काम करता था। (भूतकाल)
iii) मुख्यमंत्री जी भाषण दे रहे हैं। (वर्तमान काल)

43) इ) अन्य लिंग
i) पुरुष (ii) मजदूरिन

ई अन्य वचन
44) i) भैंसा (ii) कविताएँ

उ) समानार्थक शब्द
45) i) युवा, युवक (ii) पर्वत, गिरि

ऊ) विलोम शब्द
46) i) अशिक्षित ii) कमजोर

VI अ

47) i) सामाजिक प्राणी कहा है। 1x3=3

ii) 'लघु कदमों' से आगे बढ़ती है।

iii) मानव जाति को शिक्षा लेना चाहिए।

48) पत्र लेखन

1x4=4

संबोधन

पत्र लिखनेवाले का पता
एवं दिनांक

अभिवादन

पत्र का मुख्य भाग- शैक्षणिक यात्रा का वर्णन

पत्र की प्रतीक्षा में,

तुम्हारा मित्र
अ.ब.स.

49) हिन्दी में अनुवाद 1x4=4

i) एकता में बल है।

ii) कन्नडा हमारी राज्य भाषा है।

iii) बीता हुआ समय कभी भी वापस नहीं आता।

iv) भारत की राजधानी दिल्ली है।